अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और हिन्दी

कमल कुलश्रेष्ठ
बी.एच.ई.एल,हरिद्वार

भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, चाहे वह भारत सरकार की हो अथवा भारत और भारत से बाहर के छोटे–बड़े देशों की सरकारी कम्पनियाँ–एजेन्सियाँ हों, अथवा निजी क्षेत्रों की कंपनियाँ–एजेन्सियाँ हों, जिनके लिए हिन्दी का प्रयोग वैधानिक आवश्यकता नहीं है, अपने उत्पादों पर, उत्पादों के लेबलों पर, उत्पाद और सेवा के उपयोग सम्बंधी विनिर्देशिकाओं में, बाउचरों में, यहाँ तक कि कुछ ने तो अपनी पत्रिका आदि में भी व्यावसायिक हिन्दी को व्यवहार देना शुरु कर दिया है। यह व्यवहार अथवा यूँ कहें कि व्यावासायिक हिन्दी का प्रयोग, इस क्षेत्र में कोई नई बात हो, मैं नहीं मानता। किन्तु, जिस रुप में, और जिस पैमाने पर इसका आज प्रयोग हो रहा है, उसकी शुरुआत निश्चय ही हाल की घटना है। हाँ, इस सम्बन्ध में यह भी निर्विवाद है कि यह सब एकाएक, अकस्मात् घटी घटना नहीं है, बल्कि समय का तकाजा है और विश्वात्मक व्यवसाय की जरुरत की देन है, स्वाभाविक विकास है।

भारत सरकार की बड़ी-बड़ी कंपनियों जैसे भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड (BHEL) हैवी मशीन टूल्स (HMT), नेशनल मिनरल डेवलपमैंट कॉर्पोरेशन लि. (NMDC) स्टील एथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, तेल एंव प्राकृतिक गैस आयोग, एअर इंडिया (Air India) को यदि लेते हैं, जिनका अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में व्यवसाय है, और जिनके उत्पादों, जिनकी सेवाओं में अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी का प्रयोग भी देखते हैं, तो कह सकते हैं कि ये कम्पनियाँ भारत सरकार की हैं, और इनके लिए हिन्दी का प्रयोग, बल्कि यूँ कहे कि भारत सरकार की संवैधानिक राजभाषा होने के चलते इनके लिए हिन्दी का प्रमुखता के साथ प्रयोग इनकी अनिवार्यता है। यह सही भी है और, यह व्यावसायिक आवश्यकता की देन हो भी, तो भी तो कोई सहज ही इसे यह कहकर तत्काल नकार सकता है कि इन कम्पनियों ने वैधानिक नियमों के पालन में हिन्दी का प्रयोग किया है। किन्तु हिन्दुस्तान लीवर, सहारा इंटरनेशनल, ग्लैक्सो, जान्सन एण्ड जान्सन, स्टार टी.वी., बी.बी.सी लंदन, व्वायस ऑफ अमेरिका आदि अपने व्यवसाय में हिन्दी का प्रयोग और ऐसी कंपनियों–एजेन्सियों में से कुछ द्वारा हिन्दी का, व्यावसायिक हिन्दी का अपने व्यवसाय में, अपने कारोबार में प्रमुखता के साथ प्रयोग हमें क्या संदेश देता है?

इस संबंध में एक बात और ध्यान देने की है, और वह यह कि इनके द्वारा प्रारंभ से ही व्यावसायिक हिन्दी का प्रयोग होना शुरू हो, ऐसा नहीं है। जैसे–जैसे इनका व्यापार विश्वात्मक धरातल पर बढ़ा है, और इन्होंने विश्व की अन्य भाषा के प्रयोग का अथवा विश्वात्मक धरातल पर व्यवसाय के लिए भाषागत प्रयोग का अध्ययन किया है, वैसे-वैसे क्रमिक रूप में हिन्दी का थोड़ा, और फिर अधिक प्रयोग की ओर झुकाव देखा जा रहा है। इसके पीछे जो भी कारण हो सकते हैं दरअसल में व्यावसायिक हिन्दी के विकास की वही जड़ है। वस्तुतः जब कोई कंपनी या एजेन्सी अपने व्यवसाय को एक से अधिक देशों में फैलाना चाहती है, विश्वात्मक स्तर पर लाना चाहती है, अथवा अपने व्यवसाय को विश्वात्मक स्तर पर ले आती है तो उसके लिए एक ओर जहाँ अपने उत्पादों–सेवाओं की गुणता बनाए रखने, उसमें वृद्धि करने की तत्काल जरुरत होती है, वहीं दूसरी ओर आज के भयंकर प्रतिस्पर्ध, सूचना–प्रौद्योगिकी के युग की तेजी से बदलती हुई तकनीक के साथ प्रतिस्पर्धा में अपने अस्तित्व को कायम रखने, और अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए ऐसे सशक्त भाषिक माध्यम की

आवश्यकता होती है जो उसके उत्पादों–सेवाओं को विश्वात्मक बाजार में न केवल पहुँचा सके, अपितु ग्राहकों-उपभोक्ताओं के दिलो-दिमाग में बैठा सके, उनकी मानसिकता में इसके लिए जगह बना सके। यह काम वही भाषा कर सकती है, जिसकी जड़, विश्व के व्यापक और भिन्न-भिन्न भाषाओं के साथ हो, जिसके बोलने-समझने वालों की संख्या विश्व की अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक हो, जो भाषा विश्व के अधिकांश देशों, खासकर बड़े देशों में प्रतिष्ठित हो आदि–आदि। इस सम्बंध में, ध्यान देने की बात है कि (1) हिन्दी आर्यन भाषा समूह में पूर्ववर्ती वैदिक संस्कृत और यहाँ तक कि संस्कृत काल की भाषा के साथ यूरोपीय (खासकर जर्मन-अंग्रेजी) तथा अरब देशों की भाषा के बिल्कुल समीप है, और कुछ हद तक उनसे संबंध है तथा सम धात्विक भी है। (2) जहाँ तक विश्व में हिन्दी बोलने-समझने वालों की संख्या की बात है, यह विश्व की समस्त भाषाओं के बीच, विश्व में किसी भी अन्य भाषा की अपेक्षा सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है अर्थात् इस दृष्टि से विश्व की पहली भाषा है जो अन्य भाषाओं की अपेक्षा विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली समझी जाती है। (3) जहाँ तक विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी की प्रतिष्ठा की बात है, हिन्दी की स्थिति विश्व के लगभग 72 देशों में है। विश्व के 119 शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। विश्व में हिन्दी जानने वाले सबसे अधिक हैं। हिन्दी अर्जेन्टाइना, बहरीन, बंग्लादेश, ब्राजील, बर्मा, कोलम्बिया, गुयाना, कोस्टारिका, इक्वाडोर, अलसल्वाडोर, फीजी, ग्वाटेमाला, गुआना, हाण्डूरास, इंडोनेशिया, कुवेत, वहरीन, मलेशिया, मारीशस, मेक्सिको, मोजाम्बिक, नेपाल, निकारागुआ, ओमान, पाकिस्तान, पनामा, पराग्वे, पेरु, कतर, सऊदी अरब, शेशेल्स, सिंगापुर, श्रीलंका, सूरीनाम, थाईलैण्ड, संयुक्त अरब अमीरात, (यू.ए.ई.), बेनेजुएला, दक्षिणी यमन, संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य, न्यू मैक्सिको, उटाह, जाम्बिया आदि देशों में तो प्रयोग में आती ही है, बल्कि यूँ कहा जाए की इनमें से अधिकांश देशों में हिन्दी की पर्याप्त प्रतिष्ठा है, और कुछ देशों में अधिकांश जनता संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी का प्रयोग करती है। इसके अतिरिक्त, ब्रिटेन, चीन, जापान, रुस, अफ्रीकी देशों में भी समधिक हिन्दी का प्रयोग, अध्ययन-अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार है। अन्य देश जहाँ हिन्दी का महत्व समझने वाले लोग हैं, हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन एवं प्रकाशन है, उनमें तुर्की,स्पेन तंजानिया, स्वीडन, स्पेन, रोमानिया, पोलैण्ड, फिलिपींस, नार्वे, केन्या, मैक्सिको, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, जर्मनी, डेनमार्क, चिकोस्लोवाकिया, कनाडा, बुलगारिया, बेल्जियम, फिनलैंड, फ्रांस, हॉलैण्ड, हंगरी, इटली, जापान, आदि को ले सकते है।

उपर्युक्त स्थिति से यह स्पष्ट है, कि हिन्दी विश्व की चर्चित और प्रतिष्ठित ही नहीं, ऐसी भाषा है, जिसको सीखना, जिसको जानना और प्रयोग करना विश्वात्मक परिदृश्य में विश्व समाज की जरुरत बन चुकी है। यही वह राज है, जो हिन्दी को व्यावासायिक धरातल पर लाकर अपने व्यावासायिक स्वरुप के विकास का अवसर दिया है, और तत्पश्चात हिन्दी का यह व्यावासायिक भाषा रुप विश्व स्तर पर व्यापक समाज की रोजी–रोटी, उसके करोबार से जुड़कर उसके जीवनयापन और व्यावासायिक प्रगति में सहायक हो रहा है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा हिन्दी को अपने व्यवसाय के प्रचार–प्रसार के लिए अपनाने की प्रवृत्ति उनके व्यावासायिक सूझ–बूझ की देन है।

विश्व के व्यापक देशों में, जिनकी चर्चा हो चुकी यह बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जब अपने माल, अपनी सेवा को लेकर जाते है तो अंग्रेजी अथवा उन देशों के भाषा के साथ जब हिन्दी का प्रयोग करते है, तो हिन्दी भाषा के जानने–समझने वाले के लिए उनके उत्पादों–सेवाओं के साथ अपना ताल–मेल बैठाना, उनके प्रति अपना मन बनाना कठिन नहीं होता है। इस तरह उनके ग्राहकों का प्रसार होता है, उनके व्यवसाय की वृद्धि होती है, विकास होता है। व्यावासायिक हिन्दी से जुड़े होने के कारण व्यावासायिक हिन्दी के बढ़ती हुई दौड़ और बढ़ती हुई जानने

समझने वालों की संख्या के साथ इनके व्यवसाय के विकास की संभावनाएं भी अपने आप बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की आवश्यकता उन विदेशियों को भी है जो भारतीयों के साथ अथवा भारतीय मूल के लोंगों के साथ वाणिज्य-व्यापार में सन्लग्न हैं। उदाहरण के लिए यूगाण्डा, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, तंजानिया आदि देशों मे जहाँ पर्याप्त भारतीय मूल के लोग हैं वहाँ के अफ्रीकी उनकी भाषा में उनसे बात-चीत करना चाहते हैं ।

चल-चित्र में हिन्दी व्यावसायिक रूप से प्रयोग में लायी जा रही है। फीजी, मारीशस, केन्या, युगाण्डा या मध्यपूर्व अर्थात मिडिल ईस्ट के देशों में हिन्दी चल-चित्र खूब चलते हैं। अमेरिकी देशों में भी हिन्दी सिनेमा बहुत देखा जाता है। इण्डोनेसिया, थाईलैंड हाँगकाँग, मलेशिया में भी हिन्दी फिल्मों को अच्छा बाजार मिला है। जर्मनी के हाइडिलबर्ग शहर में सिनेमाघरों में रविवार को हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की फिल्म दिखाई जाती हैं। फिल्म दिखाने का यह कार्य कोई सरकारी सेवा तो नही है। निश्चित रूप से धन कमाने का माध्यम है। इस प्रकार हिन्दी के माध्यम से सिनेमा क्षेत्र के उद्योग भारी व्यापार कर रहे हैं।

व्यावसायिक हिन्दी का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र पत्रकारिता है। आज विश्व के अनेक देशों से हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। और उनमें से बहुत सी पत्रिकाओं का प्रकाशन न केवल ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से, शैक्षणिक और सांकृतिक आदान-प्रदान की दृष्टि से अपितु आर्थिक दृष्टि से तथा व्यावसायिक दृष्टि से भारी लाभदायक सिद्ध हो रहा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में हिन्दी भाषा का जितना योगदान है उतना अन्य किसी भाषा से शायद ही हो सकता है। और विश्व बाजार में किसी भी उद्योग को, विश्वात्मक उद्योग को प्रतिष्ठित करने के लिए विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक तथा समृद्ध भाषा अखिल भारतीय स्तर पर और विश्व में हिन्दी जानने-समझने वालों के बीच प्रभावी संप्रेषण माध्यम व्यावसायिक हिन्दी को अपनाना व्यवसायियों की आवश्यकता बन चुकी है।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

*****

विधाता कर्मानुसार संसार का निर्माण करता है किन्तु
साहित्यकार इस प्रकार के बन्धनों से ऊपर है।
-पं. रामचन्द्र